2 फरवरी 2010, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

देहादि परपदार्थों से भिन्न निज भगवान आत्मा में अपनापन स्थापित होना भी एक अभूतपूर्व क्रान्ति है, धर्म का आरंभ है।

- आत्मा ही है शरण, पृष्ठ-51

वर्ष : 32, अंक : 21 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

फरवरी (प्रथम), 2010 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

170 तीर्थंकर मण्डल विधान एवं ढाईद्वीप मंदिर शिलान्यास समारोह सम्पन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ नेमीनगर जैन कॉलोनी में दिनांक 14 से 17 जनवरी, 2010 तक श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट एवं नेमिनाथ दि.जैन मंदिर नेमीनगर के संयुक्त तत्त्वावधान में 170 तीर्थंकर मण्डल विधान, द्वितीय आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं प्रतिष्ठेय 151 प्रतिमाओं की द्वितीय विशाल प्रभावना यात्रा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मूडबिद्री के भट्टारक श्री चारुकीर्ति स्वामीजी, अन्तरर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा जयपुर, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर एवं डॉ. ममता जैन बांसवाड़ा का समागम मिला।

आयोजन के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्री कमलकुमारजी कन्हैयालालजी पाडलिया विनयनगर इन्दौर, श्री विमलकुमारजी जैन (नीरु कैमिकल) दिल्ली, श्री कैलाशबेन भरतभाई मेहता टोरंटो कनाडा, श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन (जयपुर) अमेरिका थे।

प्रथम दिन ध्वजारोहण श्री मांगीलालजी अनीषकुमारजी ऋषभजी (नृसिंहपुरा) इन्दौर ने किया। आयोजन के उद्घाटनकर्त्ता श्री राजेन्द्रकुमारजी आशीषजी अविनाशजी सेठी-राजचन्द्रनगर, इंदौर थे। मुख्य कलश विराजमानकर्त्ता श्री सुरेशचंदजी मनीषजी गंगवाल इन्दौर, श्रीमती विमलाबाई अजय-विजय-संजयजी वैद इन्दौर, श्री अभयजी सलिलजी बड़जात्या इन्दौर एवं श्री विनोदजी शुभमजी सेठी जैन प्लाईवुड इंदौर रहे।

दिनाँक 16 जनवरी को रात्रि में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन के पश्चात् उनका सम्मान समारोह रखा गया।

अंतिम दिन दिनांक 17 जनवरी को 151 प्रतिष्ठेय प्रतिमाओं को ढाई द्वीप जिनायतन पहुँचाने के लिये 3.5 कि.मी.लम्बे विशाल जुलूस में 35 बग्घियों, 10 घोड़ों एवं 151 वाहनों (मेटाडोर) द्वारा लगभग 14 कि.मी. का सफर तय किया गया। भारतवर्ष में पहली बार हीरे, सोने, चाँदी और ताँबे की 8945 तगारियों द्वारा क्रेन से 47 फीट ऊपर जाकर मेरुपर्वत की कार सेवा की गई। प्रथम तगारी में श्रवणबेलगोला के भट्टारक चारुकीर्ति स्वामीजी द्वारा भेजेगये माणक, मोती, पन्ना एवं सोने-चाँदी के पुष्प तथा मूडबिद्री के भट्टारकजी द्वारा साथ में लाये गये रत्नों को डालने का सौभाग्य श्री एम.के. जैन-सुभाषनगर, इन्दौर को मिला।

कार्यक्रम के अंत में ढाईद्वीप जिनायतन ट्रस्ट की ओर से ट्रस्ट के कार्याध्यक्ष डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने पद्मश्री बाबूलाल पाटोदी, पण्डित रतनलालजी शास्त्री, पण्डित रमेशचंदजी बांझल, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, पण्डित प्रदीपजी झांझरी, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. ममताजी जैन बांसवाड़ा, श्री सुन्दरलालजी बीड़ीवाले इंदौर, डॉ. अशोकजी जैन, श्री कमलजी बड़जात्या मुम्बई, श्री अशोकजी घीया मुम्बई, श्री उल्लासभाई जोबालिया एवं श्रीमती शशिकलाबेन मुम्बई का सम्मान किया।

इसी प्रसंग पर श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट के नये ट्रस्टी बनने पर श्री प्रकाशजी छाबड़ा सूरत का सम्मान भी किया गया।

सम्मान से पूर्व भट्टारक चारुकीर्तिस्वामीजी-मूडबिद्री के मार्मिक उद्बोधन एवं डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के **आत्मा की खोज** पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला।

इसी दिन 108 कमरों की धर्मशाला का शिलान्यास स्व.संतोषबेन चेरिटेबल ट्रस्ट की ओर से डॉ. राजेश जैन इन्दौर ने किया, जिसे भट्टारक चारुकीर्तिजी ने पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के सहयोग से सम्पन्न कराया।

170 तीर्थंकर विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा, पण्डित संदीपजी शास्त्री चैतन्यधाम-अहमदाबाद, पण्डित मनीषजी शास्त्री, पण्डित शीतलजी पाण्डेय उज्जैन, पण्डित दिनेशजी कासलीवाल उज्जैन एवं पण्डित अशोकजी जैन उज्जैन के सहयोग से संपन्न हुये।

पाठ्यक्रम में भारिल्ल द्वय की पुस्तकें

उदयपुर (राज.) : यहाँ दिनाँक 9 जनवरी को मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के पीएच.डी. कोर्स वर्क के द्वितीय पेपर में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की **परमभावप्रकाशक नयचक्र** एवं पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की **इन भावों का फल क्या होगा** पुस्तकें रखी गयीं हैं।

फैडरेशन के प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री ने बताया कि राजस्थान में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय ही ऐसा विश्वविद्यालय है, जिसमें छात्र द्वारा 50 अंक का पीएच.डी प्री-टेस्ट एवं इन्टरव्यू पास करने के पश्चात् ही उसे पीएच.डी. के लिये प्रवेश मिलता है। टेस्ट के द्वितीय प्रश्न-पत्र में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की पुस्तकों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है।

इसके लिये फैडरेशन के प्रदेशप्रभारी श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री एवं जैनविद्या एवं प्राकृत के विभागाध्यक्ष डॉ. एच. सी. जैन का विशेष प्रयास रहा।

सम्पादकीय – 28

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

पंचास्तिकाय गाथा-42 तक का अनुशीलन 27 किश्तों में अप्रैल (द्वितीय) 2005 तक प्रकाशित किया गया था, अब यहाँ उसके आगे की गाथाओं का अनुशीलन प्रकाशित किया जा रहा है।

गाथा-43

विगत गाथा ४२ में दर्शनोपयोग के भेदों के नाम एवं उनके स्वरूप का कथन किया गया है।

अब इस ४३वीं गाथा में यद्यपि आत्मा एवं ज्ञान की सहेतुक अपृथकता बताई है, दोनों के द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव एक ही अस्तित्वमय रचित होने से भी दोनों को एक सिद्ध किया है; तथापि अनन्त सहवर्ती गुणों एवं क्रमवर्ती पर्यायों का आधार होने के कारण अनन्त रूपा होने से आत्मद्रव्य व ज्ञान को विश्वरूप (अनेकरूप) भी कहा है। अनेक भेद रूप होने का भी जीव का स्वतः सिद्ध स्वभाव है।

मूलगाथा इस प्रकार है –

ण वियप्पदि णाणादो णाणी णाणाणि होंति णेगाणि।
तम्हा दु विस्सरूवं भणियं दवियं त्ति णाणीहिं।।४३।।

(हरिगीत)

ज्ञान से नहिं भिन्न ज्ञानी, तदपि ज्ञान अनेक हैं।
ज्ञान की ही अनेकता से जीव विश्व स्वरूप है ॥४३॥

इस 43वीं गाथा में आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं कि – यद्यपि यहाँ इस प्रकरण में ज्ञान और ज्ञानी में कोई भेद नहीं, दोनों अभेद हैं; क्योंकि द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव से गुण-गुणी एक हैं, तथापि ज्ञान के अनेक भेद भी हैं, इसी कारण आचार्यों ने जीव द्रव्य को भी अनेक रूप कहा है।

आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं कि – प्रथम तो ज्ञानी (आत्मा) ज्ञान से पृथक् नहीं है; क्योंकि दोनों एक अस्तित्व से ही रचित होने से दोनों को एक द्रव्यपना है, दोनों के अभिन्न प्रदेश होने से दोनों को एक क्षेत्रपना है, दोनों एक ही समय रचे जाते हैं; अतः दोनों में एक कालपना है तथा दोनों का स्वभाव एक होने से दोनों में एक भावपना है।

आत्मा ज्ञान से अपृथक् होने पर भी आत्मा में मति, श्रुत आदि अनेक भेदरूप ज्ञान होने में विरोध नहीं है; क्योंकि आत्मद्रव्य भी तो अनेकरूप है, विश्वरूप है।

द्रव्य को वस्तुतः अनेक सहवर्ती गुणों एवं क्रमवर्ती पर्यायों का आधार होने के कारण एक होने पर भी अनेकरूप (विश्वरूप) कहा जाता है। इस कारण आत्मा को अनेक ज्ञानात्मक होने में विरोध नहीं है।

आचार्य जयसेन ने इस गाथा में आचार्य अमृतचन्द का ही अनुसरण किया है, विशेष यह है कि – आत्मा का ज्ञानादि गुणों के साथ संज्ञा, संख्या, लक्षण, प्रयोजन आदि भेद होने पर भी निश्चयनय से प्रदेश अभिन्नता है तथा मति आदि अनेक ज्ञानपना स्थापित किया गया है। द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव से गुण-गुणी एक हैं। इसप्रकार अभेदनय से एकता जानना।

इस सम्बन्ध में कवि हीरानन्दजी काव्य की भाषा में कहते हैं कि –

(दोहा)

ग्यानी ग्यान जुदा नहीं, ग्यान अनेक प्रकार।
विश्वरूप तातैं कहा, द्रव्यग्यान जिनसार।।२२४।।

(सवैया)

ग्यानी जीव द्रव्य कह्या ग्यान गुन तामैं लह्या,
गुण-गुनी भेद तातैं एक वस्तु माही है।
दोनों मांहि अस्ति एक तातैं एक द्रव्यपना,
दोनों तो अभिन्न एक खेत पर छाहीं है।।
दोनों एक समैवर्ती तातैं एक काल लसै,
दोनों के सुभाव एक; एक भावता[१] ही है।
द्रव्य विश्वरूप एक, गुण हैं अनेक तामैं;
वस्तु स्याद्वाद सधै, एकान्त रूपा नाहीं है।।२२५।।

(दोहा)

एक कहत बनती नहीं, नहीं अनेक की ठौर।
अनेकान्तमय वस्तु है सिवमारग की दौर।।२२६।।

उपर्युक्त काव्य में कवि कहते हैं कि – जीव द्रव्य है, ज्ञान उसमें गुण है। इस तरह द्रव्य में गुण-गुणी भेद है। आत्मा में सर्वथा एकपना नहीं है।

यद्यपि दोनों में अस्तिपना एक है अर्थात् दोनों का अस्तित्व एक है इसकारण द्रव्यपना एक है, दोनों अभिन्न है, दोनों का द्रव्य-क्षेत्र-काल एवं स्वभाव एक है। इसप्रकार जीवद्रव्य एक होकर भी गुणों की अपेक्षा अनेक हैं। अतः स्याद्वाद के कथन से कहें तो वस्तु एक होकर भी अनेक हैं और अनेक होकर भी एक है।

कवि काव्य की भाषा में कहते हैं कि वस्तु को एक कहते भी नहीं बनता; क्योंकि वस्तु गुणभेद से अनेक भी है और अनेक कहते भी नहीं बनता; क्योंकि स्वचतुष्टय आदि की अपेक्षा से वस्तु एक है। अतः वस्तु को अनेकान्तरूप कहना ही ठीक है, ऐसी श्रद्धा और स्वीकृति ही मुक्ति का मार्ग है।

गुरुदेव श्री कानजीस्वामी उक्त बात का स्पष्टीकरण करते हुए कहते हैं कि – आत्मवस्तु ज्ञान गुण से पृथक् नहीं है। आत्मा के असंख्य प्रदेशों में ज्ञानगुण व्याप्त होकर रहता है। निमित्त के रूप में यद्यपि अन्य द्रव्य होते हैं; परन्तु उन निमित्तों के कारण वस्तु में फेर-फार नहीं होता। परमार्थ से

१. भावपन

गुण-गुणी में भेद नहीं है; क्योंकि द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव से गुण-गुणी एक हैं। वस्तुतः कर्म के क्षयोपशम के कारण भी ज्ञान नहीं होता। अपने ज्ञानस्वभाव से ज्ञान होता है, निमित्त परद्रव्य है; अतः निमित्तों का वस्तु में अभाव है।

निमित्तों का, स्वतंत्रपर्याय का एवं अभेद स्वभाव का यथार्थ ज्ञान होने पर एक द्रव्य ही उपादेय है - ऐसी बुद्धि होना ही ज्ञान का फल है।

१. कर्मादि पर पदार्थों के निमित्तरूप अस्तित्व को ही न माने तो ज्ञान खोटा है; क्योंकि कर्मादि निमित्तों का अस्तित्व है।

२. कर्मादि निमित्तों में कार्य का कर्त्ता मानें तो श्रद्धान खोटा है; क्योंकि कार्य पर के कारण नहीं, बल्कि स्वयं की तत्समय की उपादानगत योग्यता से होता है।

अब पर पदार्थों के भेद तथा अपने आत्मा के गुण-गुणी में अभेद बताते हुए कहते हैं कि - शरीर, कर्म, आहार, पानी के द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव आत्मा से सर्वथा भिन्न हैं। इसप्रकार पर के चतुष्टय पर में तथा आत्मा के द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावरूप स्व-चतुष्टय आत्मा में है। इसकारण पर के कारणों से आत्मा की पर्याय में कुछ भी फेरफार नहीं होता।

अब कहते हैं कि जिसप्रकार परचतुष्टय आत्मा से अभाव रूप हैं, उसप्रकार गुण के चतुष्टय गुणी (आत्मा) से अभाव रूप नहीं है; किन्तु एक हैं। जो द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव गुणी के हैं, वे ही गुणों के हैं। तथा जो द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव गुण के हैं, वे ही गुणी हैं।

अभेदरूप आत्मा के ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, स्वच्छत्व, कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान आदि गुण आत्मा से भिन्न नहीं है।

भेदनय से देखें तो आत्मा में अनेकता भी है। मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय एवं केवलज्ञान - इसतरह ज्ञान की पाँच अवस्थायें हैं। इनमें केवलज्ञानी के मात्र एक केवलज्ञान ही होता है। संसारी जीवों में किसी को मति एवं श्रुत - दो ज्ञान होते हैं, किसी को मति, श्रुत, अवधि या मति, श्रुत एवं मनःपर्यय ह्न ये तीन ज्ञान होते हैं। किन्हीं को मति, श्रुत, अवधि व मनःपर्यय के भेद से - चार ज्ञान भी होते हैं।

इसतरह वस्तु एक होते हुए भी अनेक रूप से परिणमित हो - ऐसा उसका स्वभाव है।

मूल गाथा में ही कहा है कि ह्न १. आत्मा स्वयं एकपने के स्वभाव में रहते हुए अनेकपने भी परिणमता है। अभेद स्वभाव में रहकर स्वयं ही भेदरूप होता है। विश्व शब्द जो आया है उसका अर्थ भी अनेकरूप होता है। तात्पर्य यह है कि ह्न ऐसा भेदरूप होना भी वस्तु का ही स्वभाव है, पर के कारण ऐसा नहीं होता।

मूल बात यह है कि द्रव्य अनन्त गुणों एवं अनन्त गुणों की अनन्त पर्यायों की आधार रूप एक वस्तु है। अपने में विकारी हो या अविकारी हो; अधूरी दशा हो या पूर्ण विकासरूप दशा हो, चाहे जो दशा हो; परन्तु उसका आधार वह स्वयं है। अन्य के आधार से अपने में कुछ नहीं होता। वस्तु एक अभेद होते हुए भी पर्यायों से अनेक हैं। निगोद से सिद्ध तक सबका स्वभाव ऐसा ही है।

अज्ञानी ऐसा कहते हैं कि - 'असंज्ञी जीव कर्म के कारण संसार में भटकता है, वहाँ बुद्धिपूर्वक पुरुषार्थ नहीं है, इस कारण कर्म का जोर है।' जो ऐसा कहता है, सो उसका वह कथन असत्य है। कुमति-कुश्रुत ज्ञान का परिणमन अपने स्वयं के कारण है, कर्म के कारण नहीं है।

जब कोई जीव क्षायिक समकिती होता है, तब यद्यपि केवली या श्रुतकेवली की उपस्थिति होती है; परन्तु केवली या श्रुतकेवली के कारण क्षायिक समकित नहीं होता। यदि पर्याय को पराधीन माने तो पर्याय में सुधार का अवसर नहीं रहता। इसलिए पर्याय का स्वतंत्रपने होना एवं अनेकपने होना जीवास्तिकाय का स्वयं का धर्म है। ऐसा ज्ञान करके तथा पर्याय की रुचि छोड़कर अभेद स्वभाव की श्रद्धा व ज्ञान करना धर्म है।

जो गुण द्रव्य से सर्वथा जुदा हो अथवा गुणों से द्रव्य सर्वथा जुदा हो तो उष्णता व अग्नि को एक कैसे माना जा सकेगा? उष्णता को अग्नि से पृथक् मानने का प्रसंग प्राप्त होगा। जो संभव नहीं है। इसप्रकार यह सिद्ध हुआ कि आत्मवस्तु ज्ञानगुण से पृथक् नहीं है। ●

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

10 फरवरी	राघौगढ (गुना)	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
11 से 14 फरवरी	भोपाल	सिद्धचक्र विधान एवं हीरक जयंती
15 से 17 फरवरी	चन्देरी (म.प्र.)	मंदिर शिलान्यास एवं हीरक जयंती
17 से 18 फरवरी	टीकमगढ	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
19 से 21 फरवरी	ललितपुर	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
22 व 23 फरवरी	घुवारा	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
24 व 25 फरवरी	केलवाड़ा	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
01 मार्च	कोटा	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
9 से 11 मार्च	निसई (म.प्र.)	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
12 से 14 मार्च	सागर	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
15 व 16 मार्च	खड़ैरी (म.प्र.)	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
27 व 28 मार्च	उदयपुर	महावीर जयन्ती/हीरक जयन्ती
11 मई से 3 जून	देवलाली	गुरुदेव जयंती, प्रशिक्षण शिविर व हीरक जयन्ती समापन समारोह
4 जून से 25 जुलाई	विदेश	धर्म प्रचारार्थ
1 से 10 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिक्षण शिविर
04 से 11 सितम्बर	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्यूषण
12 से 22 सितम्बर	बडौदा	दशलक्षण महापर्व

मुमुक्षु समाज को अपूरणीय क्षति

कारंजा निवासी अध्यात्म प्रवक्ता जैन दर्शन के गहरे अभ्यासक पण्डित धन्यकुमारजी भोरे का 86 वर्ष की आयु में दिनांक 4 जनवरी को सायं 5 बजे देहावसान हो गया। उनके देहावसान से संपूर्ण भारतवर्ष के जैन समाज ने एक अनमोल रत्न खो दिया है। उनके निधन से जैन समाज की अपरिमित क्षति हुई है।

नागपुर विश्वविद्यालय ने उन्हें मराठी विषय में सर्वप्रथम प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने पर स्वर्णपदक देकर सम्मानित किया। इसके पश्चात आपने एल एल.बी. की उपाधि भी प्राप्त की। महाविद्यालयीन शिक्षा प्राप्त करते समय स्वतंत्रतासेनानी के रूप में स्वतंत्रतासंग्राम में भाग लिया। जीवनभर खादी वस्त्र का ही उपयोग करने का व्रत लिया। एल एल.बी. होते हुये भी आपने खेती एवं कपास का व्यापार करने के साथ जिनवाणी का प्रचार प्रसार करने का निश्चय किया।

आपने जैन तत्त्वज्ञान पर मौलिक चिंतन तथा लेखन का कार्य किया। उन्हें चारों अनुयोगों का समीचीन ज्ञान था, उनको द्रव्यानुयोग की विशेष रुचि एवं पकड़ थी। किसी के प्रभाव मे आकर तत्त्व संबंधी समझौता कभी स्वीकार नही किया।

गुरुदेव समंतभद्रजी के आदेशानुसार मराठी भाषी जैन समाज के लिये जिनवाणी को मराठी भाषा मे उपलब्ध कराने का कार्य प्रारंभ किया। सर्वप्रथम पण्डित टोडरमलजी कृत मोक्षमार्गप्रकाशक का ढूँढारी भाषा से मराठी में अनुवाद किया तथा आचार्य कुन्दकुन्द के पंचपरमागम को भी मराठी भाषा में अनुवादित किया। इसके अतिरिक्त कार्तिकेयानुप्रेक्षा, पुरुषार्थसिद्धयुपाय, इष्टोपदेश, समाधिशतक, जैनतत्त्व मीमांसा, वारसाणुवेख्खा आदि ग्रंथों का मराठी भाषा में अनुवाद किया।

श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम अंतर्गत कंकुबाई पाठ्यपुस्तक माला के द्वारा छहढाला, द्रव्यसंग्रह, तत्त्वार्थसूत्र, नित्यनैमित्तिक पाठावली, रत्नकरण्ड श्रावकाचार तथा जैन सिद्धांत प्रवेशिका आदि अनेक ग्रंथों का संपादन किया।

आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के संपर्क मे आने के बाद समयसार एवं शुद्धात्मतत्व जैसे विषय हाथ लगे। इस रूप में स्वामीजी का उनपर विशेष प्रभाव पड़ा।

आ. पण्डितजी सभी धार्मिक एवं आध्यात्मिक संस्थाओं के साथ आत्मीयता के संबंध रखते थे। वर्ष 2007 में उन्हें राष्ट्रसंत विद्यानंद महाराज द्वारा **'स्वारस्वत मनीषी'** उपाधि से सम्मानित किया गया।

(आगामी कार्यक्रम...)

चन्देरी में शिलान्यास महोत्सव

चन्देरी (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 15 से 17 फरवरी तक त्रिदिवसीय शिलान्यास महोत्सव एवं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह आयोजित है। इस अवसर पर हिरावल ग्राम के जिनालय के 7 जिनबिंबों को अस्थायी जिनालय में विराजमान किया जाएगा।

स्मरण रहे कि चन्देरी के नये बस स्टैण्ड पर तीर्थधाम आदीश्वरम् भगवान ऋषभदेव समवशरण जिनमंदिर निर्माणाधीन है।– **अखिल बंसल**

शोक समाचार

1. भोपालगंज–भीलवाड़ा (राज.) निवासी श्री चन्द्रप्रकाशजी अजमेरा पुत्र श्री हीरालालजी अजमेरा का दिनाँक 22 जनवरी, 2010 को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया है। आप भोपालगंज में स्वाध्याय एवं अन्य धार्मिक कार्यों में अग्रणी रहे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 500/– प्राप्त हुये हैं।

2. जसवंतनगर–इटावा (उ.प्र.) निवासी श्रीमती सुशीला देवी ध.प. श्री उत्तमचंदजी जैन का दिनाँक 22 जनवरी, 2010 को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया है। आपकी स्मृति में वीतराग विज्ञान हेतु 500/– प्राप्त हुये हैं।

3. अलीगढ (उ.प्र.) निवासी डॉ. महेन्द्रसागरजी प्रचंडिया का दिनाँक 10 जनवरी को समाधिमरणपूर्वक देहावसान हो गया। आपने आठ दिन पूर्व ही अन्न का त्याग कर दिया था एवं क्रमश: जल का भी त्याग कर दिया था। आप जैनधर्म –दर्शन संस्कृति व साहित्य के मूर्धन्य विद्वानों में से थे। आपके निधन से समाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

4. सोलापुर (महा.) निवासी श्री कस्तूरचंद गुलाबचंदजी गांधी का दिनाँक 3 दिसम्बर,2009 को णमोकार मंत्र के उच्चारणपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति मे वीतराग–विज्ञान में 500/–प्राप्त हुये हैं।

5. बेगू (राज.) निवासी श्री भागचंदजी टोंग्या की मातुश्री श्रीमती मदनबाई का 86 वर्ष की आयु में दिनाँक 29 दिसम्बर को शांतपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी महिला थीं। आपकी स्मृति में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 11000/– की राशि प्राप्त हुयी है।

6. विदिशा (म.प्र.) निवासी श्री कस्तूरचंदजी का दिनाँक 18 नवम्बर को अत्यंत शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत स्वाध्यायी तो थे ही प्रतिवर्ष दशलक्षण में प्रवचनार्थ भी जाया करते थे। श्री टोडरमल महाविद्यालय की मुक्त कंठ से प्रशंसा किया करते थे।

7. लाडनूं (राज.) निवासी श्री नेमीचंदजी सरावगी (पाण्ड्या) कोलकाता का दिनाँक 12 दिसम्बर को शुभपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे, टोडरमल महाविद्यालय के प्रति आपका स्नेह एवं सहयोग निरंतर बना रहता था। आप कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट के ट्रस्टी थे तथा कोलकाता मुमुक्षु मण्डल के प्रमुख स्तम्भ थे।

8. सागर (म.प्र.) निवासी श्रीमंत सेठ श्री डालचंदजी जैन के अनुज श्री प्रेमचंदजी जैन की धर्मपत्नी **श्रीमती आशारानी जैन का** दिनाँक 15 दिसम्बर को अत्यंत शांतपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी महिला थीं।

9. बड़नगर (म.प्र.) निवासी चि. आशीष कुमारजी पाटोदी सुपुत्र श्री अनिलकुमारजी पाटोदी का दिनाँक 28 दिसम्बर को अल्पायु में देहावसान हो गया। आप अत्यंत सरल परिणामी थे।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों – यही हमारी मंगल भावना है।

"A" ग्रेड संस्था

जैन अल्पसंख्यक इंजिनीयरींग कॉलेज

श्री ऐलक पन्नालाल दिगंबर जैन पाठशाला, सोलापूर (इ.स.1885 संस्थापित) द्वारा संचालित,

वालचंद इन्स्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, सोलापूर

(इ.स.1983 संस्थापित)

एआयसीटीई नई दिल्ली द्वारा मान्यताप्राप्त
अशोक चौक, सोलापूर – 413 006 (महाराष्ट्र)
दूरभाष : 0217 - 2652700 फैक्स : 0217 - 2651538
E-mail : principal@witsolapur.org

सकल जैन समाज के छात्रों को चार वर्षीय डिग्री इंजिनीयरींग कोर्स मे प्रथम वर्ष प्रवेश के लिए 50% सिटें आरक्षित है।

सभी उम्मीदवारोंको MHT-CET 2010 परीक्षा देना अनिवार्य है।

प्रवेश प्रक्रिया के आवेदन पत्र प्राप्त और जमा करने कि अनुमानित तिथी 1 फरवरी 2010 से मार्च प्रथम सप्ताह तक होती है।

MHT-CET 2010 परीक्षा अप्रेल– मई 2010 के दरम्यान आयोजित कि जाती है।

वर्ष 2010-2011 प्रवेश प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी यथा समय हमारे कॉलेज के वेबसाईट www.witsolapur.org पर उपलब्ध होगी।

प्रथम श्रेणीमें उत्तीर्ण डिप्लोमा धारक को भी
Direct Second Year Engineering प्रवेश के लिए 50% सीटे आरक्षित है।

हमारी विशेषताएँ

- More than 100 PG Teachers
- Almost 100% Campus Placement
- More than 60 Companies for Campus Recruitment

महाविद्यालय तथा प्रवेश प्रक्रिया के बारे मे अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :

प्रा. प्रसन्न एखंडे : 09422457311 प्रा. संजीव जमगे : 09822790360

डॉ. एस.ए. हलकुडे
प्राचार्य

डॉ. रणजित गांधी
सेक्रेटरी

हमारी संस्था के अन्य पाठ्यक्रम

Masters in Business Administration (M.B.A.)

सभी उम्मीदवारोंको महाराष्ट्र स्टेट की 21 फरवरी को आयोजित MBA-CET 2010 परीक्षा देना अनिवार्य है।

विशेषताएँ

- Established in 1981.
- Experienced Faculty.
- Placement in renowned Companies.

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें –
डॉ. राजशेखर येळिकर Mobile : 09423588975, **website** : www.hnccmba.org.in

CENTER FOR BIOTECHNOLOGY

Courses Available

a) B.Sc.- Biotechnology
b) M.Sc.- Genetics
c) M.Sc. - Bio-informatics

Special Features

1) Highly Qualified and experienced faculty.
2) Highly furnished and well equipped laboratories.
3) Campus Placement.

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें –
प्राचार्य. डॉ. अजित माणिकशेटे Mobile : 09422460706, **website** : www.wcassolapur.org

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

〈45〉 – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

ग्यारहवाँ प्रवचन

मोक्षमार्गप्रकाशक का छठवाँ अधिकार चल रहा है। इसमें कुदेव, कुगुरु और कुधर्म की चर्चा की गई है। अबतक अपन कुदेव की चर्चा कर चुके हैं और कुगुरु की चर्चा चल रही है; जिसमें अभीतक कुल अपेक्षा, पट्ट अपेक्षा एवं विविध वेशों की अपेक्षा कुगुरु की चर्चा हुई।

अब यह समझाते हैं कि ये कुगुरु और उसके अनुयायी अपने शिथिलाचार को किसप्रकार पुष्ट करते रहे हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि शास्त्रों में सच्चे गुरु का जो स्वरूप बताया गया है; वैसे गुरु तो कहीं देखने में आते नहीं हैं और यदि इन्हें भी हम गुरु के रूप में स्वीकार नहीं करेंगे तो हम निगुरा कहलायेंगे।

निगुरा न कहलायें – इसलिए किसी न किसी को तो गुरु स्वीकार करना ही है; अत: प्रकारान्तर का अभाव होने से इन्हीं को गुरु मान लेना ठीक है।

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए पण्डितजी कहते हैं कि **निगुरा तो उसे कहते हैं, जो गुरु को मानते ही नहीं हैं; किन्तु इस क्षेत्र में किसी भी व्यक्ति में गुरु का लक्षण दिखाई नहीं देने पर किसी व्यक्ति विशेष को गुरु नहीं मानने का नाम तो निगुरा नहीं है।**

जिसप्रकार नास्तिक तो उसका नाम है, जो परमेश्वर को नहीं मानता, उनकी सत्ता को स्वीकार नहीं करता; परन्तु क्षेत्र विशेष में, किसी व्यक्ति विशेष में परमेश्वर का लक्षण न देखकर, उसे परमेश्वर नहीं मानने से तो नास्तिक नहीं होते; उसीप्रकार गुरु के संदर्भ में भी समझना चाहिए।

इस पर लोग कहते हैं कि शास्त्रों में कहा है कि पंचमकाल के अन्त तक इस क्षेत्र में मुनि-आर्यिका और श्रावक-श्राविका होंगे; अत: इन्हें गुरु मानना ही पड़ेगा।

अरे भाई ! जिसप्रकार यह कहा है कि यहाँ हंस होते हैं। इसके आधार पर असली हंस दिखाई न देने पर बगुलों को तो हंस नहीं माना जा सकता। यह क्षेत्र बहुत बड़ा है, भले ही यहाँ हंस नहीं है; पर कहीं न कहीं तो होंगे ही।

इसीप्रकार हमें कहीं कोई सच्चे साधु (गुरु) दिखाई न देने पर भी इन वेश धारियों को साधु नहीं माना जा सकता; यह भरतक्षेत्र बहुत बड़ा है, यहाँ नहीं तो कहीं न कहीं सच्चे साधु अवश्य होंगे।

अरे भाई ! पिता के न होने पर अर्थात् पिता की मृत्यु हो जाने पर पिता सदृश किसी अन्य व्यक्ति को जिसप्रकार पिता नहीं माना जा सकता; पति के न होने पर या मृत्यु हो जाने पर जिसप्रकार किसी अन्य व्यक्ति को पति नहीं माना जा सकता; उसीप्रकार सच्चे गुरुओं के अभाव में किसी अगुरु या कुगुरु को गुरु या सुगुरु किसी भी स्थिति में नहीं माना जा सकता।

इस पर कोई कहता है कि एक अक्षर दाता को गुरु मानते हैं; जो शास्त्र सिखलाये, उसे गुरु क्यों नहीं मानें ?

उक्त प्रश्न का उत्तर पण्डितजी के शब्दों में देखिये –

''गुरु नाम बड़े का है। इसलिए जिसप्रकार का बड़ापन जिसके संभव हो, उसे उसीप्रकार की गुरु संज्ञा संभव है। कुल अपेक्षा माता-पिता गुरु हैं, विद्या पढानेवाले विद्यागुरु हैं; परन्तु **यहाँ तो धर्म का प्रकरण है; इसलिए जिसके धर्म अपेक्षा महंतता हो, बड़ापन हो; उसे गुरु मानना।**

धर्म नाम चारित्र का है। कहा भी है कि **'चारित्तं खलु धम्मो'** इसलिए चारित्र के धारक को ही गुरु संज्ञा है।

जिसप्रकार भूतादि व्यंतरों का नाम भी देव हैं, तथापि यहाँ अरहंत-सिद्ध को ही देव के रूप में ग्रहण करना; उसीप्रकार औरों का नाम भी गुरु हैं, तथापि यहाँ **सम्यग्दर्शन-ज्ञान सहित चारित्र के धारी निर्ग्रन्थों को ही गुरु के रूप में ग्रहण कहना चाहिए।**

इस पर कोई कह सकता है कि जैसे श्रावक, तैसे मुनि; पर यह कहना ठीक नहीं है; क्योंकि **श्रावक तो सामान्य से सभी जैनियों को कहते हैं। राजा श्रेणिक अव्रती था; पर उसे श्रावकोत्तम कह दिया। मुनियों में ऐसा नहीं चल सकता।**

देखो, आदिनाथ के साथ चार हजार राजा दीक्षा लेकर पुन: भ्रष्ट हुए; तब देव उनसे कहने लगे कि जिनलिंगी होकर अन्यथा प्रवर्तोगे तो हम दंड देंगे। जिनलिंग छोड़कर जो तुम्हारी इच्छा हो सो तुम जानो। इससे यह सहज ही सिद्ध है कि जो जिनलिंगी होकर अन्यथा प्रवर्ते तो वे तो दण्ड योग्य हैं, वंदनादि योग्य कैसे होंगे ?[१]''

यहाँ पण्डित टोडरमलजी मोक्षमार्गप्रकाशक में उपदेशसिद्धान्त रत्नमाला की दो गाथायें उद्धृत करते हैं; जो इसप्रकार हैं –

सप्पो इक्कं मरणं कुगुरु अणंताइ देह मरणाईं।
तो वर सप्पं गहियं मा कुगुरु सेवणं भद्दं।।३७।।
सप्पे दिट्ठे णासइ लोओ न हि कोवि किंपि अक्खेइ।
सो चयइ कुगुरु सप्पं हा मूढा भणइ तंदुट्ठ।।३६।।

सर्प द्वारा तो एक बार मरण होता है और कुगुरु अनन्त बार जन्म-मरण कराता है; इसलिए हे भद्रपुरुषो ! एक बार सर्प के ग्रहण को तो भला कह भी सकते हैं; किन्तु कुगुरु का सेवन तो कभी भी मत करना।

आश्चर्य की बात तो यह है कि सर्प को देखकर कोई भागे तो लोग उसे कुछ नहीं कहते; परन्तु, हाय, हाय; देखो तो जो लोग कुगुरु सर्प को छोड़ते हैं, उसे मूढ लोग दुष्ट कहते हैं, बुरा बताते हैं।

आज की स्थिति तो यह है कि गुरु के स्वरूप के बारे में भी जरा सी चर्चा करो तो लोग कहने लगते हैं कि तुम कौन होते हो गुरुओं की

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ १८६

परीक्षा करने वाले ?

अरे, भाई ! हम किसी गुरु की परीक्षा करने की बात नहीं कह रहे हैं; हम तो सच्चे गुरु का स्वरूप समझने-समझाने का प्रयास कर रहे हैं।

रही बात किसी व्यक्ति विशेष की परीक्षा करने की बात तो भाई ! किसी को गुरुरूप में स्वीकार करने के पहले उन्हें जानना-पहिचानना तो पड़ेगा ही; क्योंकि जाने-पहिचाने बिना किसी को भी किसी भी रूप में कैसे स्वीकार किया जा सकता है ?

हमारे आचार्यों ने तो बिना परीक्षा अरहंत भगवान को भी स्वीकार नहीं किया, हमारे शास्त्रों के तो नाम ही आप्तपरीक्षा, आप्तमीमांसा - इसप्रकार के हैं और उनमें वीतरागी-सर्वज्ञ भगवान की जमकर परीक्षा की गई है।

गजब हो गया; जब कोई किसी लड़की को पत्नी के रूप में या लड़के को पति के रूप में स्वीकार करता है तो पूरी जांच-परख करके ही करता है; पर जब गुरु की बात आती है तो यह कहा जाता है कि गुरुओं की क्या परीक्षा करना ?

अरे, भाई ! हम किसी को पति या पत्नी बनाने में जितने सतर्क रहते हैं; किसी को गुरुरूप में स्वीकार करने में उतने भी सतर्क नहीं रहना चाहते। क्या गुरु के संबंध में की गई यह उपेक्षा सही है ?

नहीं, कदापि नहीं। अरे, भाई ! देव तो हमारे आदर्श हैं, वे तो वर्तमानकाल में पूर्णत: परोक्ष ही हैं; किन्तु **गुरुओं का तो प्रत्यक्ष समागम होता है, वे तो हमारे सीधे मार्गदर्शक होते हैं; उनके चुनाव में की गई जरा सी असावधानी भी बहुत खतरनाक सिद्ध हो सकती है। अत: हमें सुगुरु और कुगुरु के स्वरूप को बहुत ही सावधानी से समझने का प्रयास करना चाहिए।**

इसप्रकार यहाँ कुगुरु की चर्चा से विराम लेते हैं और अब कुधर्म के संबंध में बात आरंभ करते हैं।

जिनागम में लगभग सर्वत्र ही, जब भी देवादिक की चर्चा होती है तो देव-शास्त्र-गुरु की एकसाथ ही होती है; परन्तु यहाँ शास्त्र का स्थान धर्म ने ले लिया है।

अबतक कुदेव और कुगुरु के बारे में मंथन किया है और अब कुधर्म की प्रवृत्तियों की बात आरंभ कर रहे हैं। यद्यपि यह सभी चर्चा मुख्यत: दिगम्बर जैनों के संदर्भ में की जा रही है; तथापि दिगम्बर जैन लोग; जिन लोगों के बीच रहते हैं, उन जैनेतर लोगों का विशाल जन समुदाय होने से, उन लोगों में पाई जाने वाली प्रवृत्तियों से प्रभावित होकर उन्हें अपना लेते हैं। यद्यपि दशहरा और होली के त्योहार जैनों से संबंधित नहीं हैं; तथापि शायद ही कोई दिगम्बर जैन इनसे अछूता रहा होगा।

इसलिए यहाँ उन प्रवृत्तियों की भी चर्चा होगी; जो जैनेतरों से जैनियों में आ गई हैं। यद्यपि पंचकल्याणक प्रतिष्ठाओं में एक छोटा सा कार्यक्रम पालना झूलन का होता है; परन्तु आजकल कुछ लोग जन्माष्टमी की नकल पर महावीर जयन्ती या पर्यूषण में भी पालनाझूलन का कार्यक्रम रख लेते हैं और उसमें प्रतिष्ठित प्रतिमा रखकर उसे झुलाते हैं; जबकि पंचकल्याणक में जो प्रतिमा झूले में रखी जाती है, वह तबतक अप्रतिष्ठित ही होती है। झूले में झूलना बालक को तो शोभा देता है; पर केवलज्ञानी सर्वज्ञ परमात्मा के साथ बालकवत् व्यवहार करना कहाँ तक उचित है ?

पर आज लोगों ने उसे आय का साधन बना लिया है। जो जो क्रियायें आमदनी से जुड़ जाती हैं, वे कितनी ही गलत क्यों न हों, उनका रुकना संभव नहीं रहता।

आजादी के आन्दोलन के साथ शराब, सिगरेट आदि के विरुद्ध भी आवाज उठी थी और यह संकल्प लिये जा रहे थे कि आजाद भारत में कुछ नहीं होगा; किन्तु जब भारत आजाद हो गया तो पूरी तरह शराबबंदी को अव्यवहारिक मानकर उस पर अधिकाधिक टैक्स लगाने की बात रखी गई। इसप्रकार वर्ष-प्रतिवर्ष टैक्स बढता रहा और शराब-सिगरेट चलते रहे। जब उनके प्रचार-प्रसार में कोई कमी नहीं आई तो चिन्ता हुई कि क्या करें ? फिर शराबबंदी के लिये आवाज उठने लगी, तबतक शराब भारत सरकार की आय का प्रमुख भाग बन गई थी और शराब के व्यापारी इतने समर्थ हो गये थे कि उनके चन्दे से ही नेता लोग चुनाव लड़ने लगे थे। ऐसी स्थिति में अब शराबबंदी एक स्वप्न बनकर रह गई है।

इसीप्रकार जब धर्म के नाम पर चलने वाली खोटी प्रवृत्तियाँ आय का साधन बन जाती हैं तो उनका उखड़ना असंभव सा हो जाता है। पालना झूलन जैसी प्रवृत्तियों के संदर्भ में भी यही सबकुछ हुआ है। पंचकल्याणकों में होनेवाले पालना झूलन का चार फुट का पालना बढते-बढते अब ४० फुट का हो गया है और न जाने अब कहाँ तक पहुँचेगा ?

यह पालना झूलन का कार्यक्रम जो कि कुछ मिनटों का था; आजकल घंटों में भी नहीं निबटता। तत्त्वचर्चा और प्रवचन आदि सबकुछ अस्त-व्यस्त हो जाते हैं; क्योंकि पालना के आकार-प्रकार के अनुसार उसकी बोलियों का आकार-प्रकार भी बढ जाता है और वे बोलियाँ भी घंटों तक चलती रहती हैं। उनमें भी खूब पैसा आता है, फिर प्रत्येक झुलाने वाला भी तो पैसे देता है। इसप्रकार पैसों की वर्षा में सबकुछ अस्त-व्यस्त हो जाता है।

पण्डितजी के जमाने में भी इसप्रकार की प्रवृत्तियाँ देखी जा रही थीं। यही कारण है कि वे लिखते हैं कि कितने ही लोग भक्ति आदि कार्यों में हिंसादिक पाप बढाते हैं, गीत-नृत्य-गानादिक व इष्ट भोजनादिक व अन्य सामग्रियों द्वारा विषयों का पोषण करते हैं; कुतूहल प्रमादादिरूप प्रवर्तते हैं। वहाँ पाप तो बहुत उत्पन्न करते हैं और धर्म का किंचित् भी साधन नहीं है। इन प्रवृत्तियों में धर्म मानना भी कुधर्म है। **(क्रमश:)**

2 फरवरी 2010, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

छत्तीसगढ में डॉ. भारिल्ल का सम्मान

1. खैरागढ (छत्तीसगढ) : यहाँ दिनाँक 17 से 19 जनवरी तक आयोजित कार्यक्रमों के दौरान दिनांक 19 जनवरी को सकल जैन श्री संघ एवं अ.भा.जैन मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में प्रान्तीयस्तर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री बी.आर.जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष - अ.भा.दि.जैन परिषद) ने की। मुख्यअतिथि के रूप में पूर्व विधायक श्री कपूरचंदजी घुवारा (अध्यक्ष - म.प्र. हस्तशिल्प विकास निगम एवं सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि) उपस्थित थे। मंचासीन विशिष्ट अतिथियों में श्री खूबचंदजी पारख (उपाध्यक्ष-छ.ग.बीससूत्रीय क्रियान्वयन समिति), श्री नरेशजी डाकलिया (अध्यक्ष - सकल जैन श्री संघ एवं महापौर राजनांदगाँव), श्री लोकेशजी कावडिया (प्रांताध्यक्ष -भा.जैन संघटना छ.ग.), श्री रतनचंदजी शाह (अध्यक्ष-सोलापुर जैन समाज), श्री हीरालालजी शाह (संरक्षक-जैन स्वाध्याय मंडल रायपुर), श्री नरेशजी सिंघई (प्रांतीय अध्यक्ष-अ.भा.जैन युवा फैडरेशन महाराष्ट्र), श्री प्रकाशचंदजी जैन (संरक्षक-जैन युवा फैडरेशन रायपुर), श्री उत्तमचंदजी गिड़िया (संरक्षक-सकल जैन श्री संघ रायपुर) एवं श्रीमती गुणमाला भारिल्ल आदि महानुभाव मंचासीन थे।

इस अवसर पर छत्तीसगढ प्रान्त के डोगरगढ, डोगरगाँव, राजनांदगाँव, रायपुर, दुर्ग, भिलाई, बिलासपुर, धमतरी, घुईखदान आदि नगरों से पधारे विभिन्न संस्थाओं के विभिन्न पदाधिकारियों द्वारा डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया गया। महाराष्ट्र प्रान्त से श्री महावीर दि.जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट नागपुर, श्री महावीर विद्या निकेतन एवं अ.भा.जैन युवा फैडरेशन नागपुर द्वारा भी डॉ. भारिल्ल का तिलक लगाकर, शॉल ओढाकर एवं माल्यार्पण द्वारा भावभीना अभिनंदन किया गया।

इसके पश्चात् खैरागढ दि. जैन मुमुक्षु मण्डल के अध्यक्ष श्री दुलीचंदजी जैन ने तिलक लगाकर, माला एवं साफा पहिनाया। साथ ही सकल जैन श्री संघ के पदाधिकारियों ने श्रीफल एवं अभिनंदन पुष्प भेंट किये। अ.भा.जैन युवा फैडरेशन एवं सत्संग महिला मंडल ने भी डॉ. साहब का सम्मान किया। समाज ने उन्हें **'धर्म गूढार्थप्रकाशक'** उपाधि से अलंकृत किया।

अन्त में स्थानीय खैरागढ के सकल जैन श्री संघ, दि. जैन मुमुक्षु मण्डल, अ.भा.जैन युवा फैडरेशन, श्री श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघटना, संस्कार युवा मंच, व्यापारी संघ, अधिवक्ता संघ, मुस्लिम कम्युनिटी, नगर पंचायत आदि अनेक धार्मिक/सामाजिक संस्थाओं द्वारा हर्षोल्लासपूर्वक डॉ. भारिल्ल का अभिनंदन किया गया।

सम्मान समारोह के पश्चात् अपने उद्बोधन में डॉ. भारिल्ल ने कहा कि हीरक जयंती समारोह का तत्त्व की प्रभावना में बहुत बड़ा योगदान है तथा कार्यक्रम में तत्त्व की प्रभावना ही मुख्य है, जन्मदिन गौण है।

इस कार्यक्रम के पूर्व 17 एवं 18 जनवरी को डॉ. भारिल्ल के **'णमोकार महामंत्र'** एवं **'मैं स्वयं भगवान हूँ'** विषयों पर प्रवचनों का लाभ दिगम्बर, श्वेताम्बर, मुस्लिम आदि समाज के लोगों ने लिया, साथ ही पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित अशोकजी शास्त्री नागपुर एवं स्थानीय विद्वान पण्डित अभयकुमारजी खैरागढ के प्रवचनों का भी लाभ प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ एवं उनकी धर्मपत्नि श्रीमती श्रुति जैन ने किया। अंत में सकल जैन श्री संघ के अध्यक्ष श्री मोतीलालजी गिड़िया ने सभी का आभार प्रदर्शन किया।

2. रायपुर (छत्तीसगढ) : यहाँ दिनाँक 20 जनवरी को सुराणा भवन में श्री जैन स्वाध्याय मंडल, श्री वीतराग विज्ञान बहुउद्देशीय समिति एवं अ. भा. जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया।

इस अवसर पर श्री सुरेशचंदजी जैन रायपुर (मैनेजिंग ट्रस्टी - दि.जैन मंदिर पंचायत ट्रस्ट), श्री संजयजी नायक (अध्यक्ष - मंदिर कार्यकारिणी), श्री इंदरचंदजी एवं अन्य पदाधिकारियों व गणमान्य नागरिकों द्वारा डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया गया।

डॉ. भारिल्ल का परिचय देते हुये श्री प्रकाश जैन (सचिव - जैन स्वाध्याय मंडल) ने कहा कि उनकी प्रवचन शैली एवं लेखन शैली से जैनतत्त्वज्ञान की कठिन व गूढ बातें भी सहजबोधगम्य हो जाती है। श्रीमती ममता जैन (सचिव- टैगोर नगर मंदिर एवं अ.भा.जैन महिला परिषद) ने अपने उद्बोधन में बताया कि अनेक बाधाओं के बावजूद आपने जिनधर्म का ध्वज फहराकर बच्चों, युवकों एवं बुजुर्गों को उनकी शैली में जिनतत्त्व का मर्म बताया है। श्री अरविंदभाई बटाविया एवं श्री कन्हैयालालजी दुग्गड़ ने डॉ. साहब के अलौकिक कार्य की प्रशंसा की एवं गुरुदेवश्री द्वारा उद्घाटित तत्त्व ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने वाला बताया। श्री प्रेमचंदजी गुरहा परिवार ने भी डॉ. साहब का सम्मान किया एवं नि:शुल्क साहित्य वितरित किया।

कार्यक्रम के अन्त में श्री सुरेन्द्रजी जैन (ट्रस्टी-दि.जैन मंदिर) ने धन्यवाद ज्ञापित किया। तीनों संस्थाओं द्वारा डॉ. साहब को उनके उल्लेखनीय कार्यों के लिए प्रशस्ति-पत्र प्रदान किये गये।

इस अवसर पर सम्मान समारोह के पूर्व डॉ. भारिल्ल के णमोकार महामंत्र पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला।

ज्ञातव्य है कि खैरागढ से रायपुर जाते हुये मार्ग में **दुर्ग** एवं **भिलाई** में भी डॉ. भारिल्ल के पारिणामिक भाव पर प्रवचनों का लाभ मिला। वहाँ उनका सम्मान समारोह भी रखा गया। **- प्रकाश जैन (इंजी.)**

प्रकाशन तिथि : 28 जनवरी 2010

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127